"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

नालंदा एवं तक्षशिला: प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन

डॉ. सुषमा देवी (सहायक प्रोफेसर) ,इतिहास विभाग, भगवान परशु राम कॉलेज, कुरुक्षेत्र

प्रस्तावना

भारत का बौद्धिक इतिहास शिक्षा की महान परंपराओं से सुसज्जित है, जहाँ ज्ञान को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूल आधार माना गया है। शिक्षा केवल जानकारी या आजीविका प्राप्ति का साधन नहीं थी, बल्कि वह जीवन को संपूर्णता प्रदान करने वाली प्रक्रिया थी। भारत में शिक्षा जीवन के हर पहलू को उन्नत बनाने का प्रयास करती थी - नैतिकता, व्यवहार, समाज, विज्ञान, चिकित्सा, कला, और अध्यात्म को समन्वित कर एक संतुलित मनुष्य का निर्माण। इस पृष्ठभूमि में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का उदय भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली की वैश्विक ऊँचाई को दर्शाता है।

प्राचीन भारत की शिक्षा की अवधारणा

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली विश्व की प्राचीनतम, व्यवस्थित और समग्र दृष्टिकोण वाली प्रणाली थी। इसका आधार केवल शैक्षणिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के चारों पुरुषार्थों - धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की पूर्ति के लिए आवश्यक संपूर्ण व्यक्तित्व विकास था। यह शिक्षा केवल पढ़ने-लिखने तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसका मूल उद्देश्य था - चरित्र निर्माण, नैतिकता का विकास, आत्मा की शुद्धि, तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध। भारतीय समाज में शिक्षा को 'विद्या' कहा गया, जिसका अर्थ था - वह ज्ञान जो व्यक्ति को अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाए। 'सा विद्या या विमुक्तये' - अर्थात वह विद्या जो मोक्ष या आत्मविकास की ओर ले जाए - यही भारतीय शिक्षा का मूल मंत्र था। इस प्रकार की शिक्षा का केंद्र गुरुकुल होते थे, जहाँ गुरु अपने आश्रम में विद्यार्थियों को स्वीकार करते थे। वहाँ वे गुरु की सेवा में रहकर, स्वावलंबी जीवन जीते हुए, आध्यात्मिक, दार्शनिक, नैतिक और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करते थे।

शिक्षा के विषयों में केवल धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन नहीं होता था, बल्कि वेद, उपनिषद, स्मृति, दर्शन, न्याय, आयुर्वेद, संगीत, वास्तु, खगोलशास्त्र, कृषि, शिल्प, युद्धकला, तंत्र-शास्त्र आदि का भी समावेश होता था। यह विविधता बताती है कि शिक्षा को जीवन के सभी पक्षों से जोड़ा गया था। इस शिक्षा प्रणाली में शब्द (श्रवण), अर्थ (मनन) और अनुभूति (निधिध्यासन) - ये तीनों स्तरों पर ज्ञान की प्राप्ति होती थी। विद्यार्थियों को मौखिक रूप से पढ़ाया जाता था, और उन्हें स्मरण शक्ति, तर्क शक्ति, तथा आत्मनिष्ठ चिंतन द्वारा ज्ञान को आत्मसात करने का अभ्यास कराया जाता था।

प्राचीन भारत में शिक्षा की विशेषता यह थी कि यह नैतिक मूल्यों पर आधारित थी। गुरु और शिष्य दोनों ही तप, संयम,

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

सदाचार और सेवा में विश्वास रखते थे। शिक्षक समाज में अत्यंत सम्मानित स्थान रखते थे और शिष्य गुरु के प्रति आजीवन श्रद्धा और कृतज्ञता बनाए रखते थे।

इस प्रणाली की एक और विशेषता यह थी कि शिक्षा सर्वसुलभ थी, चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र - यदि उसमें ज्ञान की जिज्ञासा हो, तो वह गुरु के पास शिक्षा प्राप्त कर सकता था (यद्यपि कालांतर में कुछ सामाजिक विषमताएँ उत्पन्न हो गईं)।

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत की शिक्षा एक **जीवंत,** व्यापक और जीवनमूल्य आधारित प्रणाली थी, जो केवल व्यक्ति का बौद्धिक विकास ही नहीं करती थी, बल्कि उसे एक जिम्मेदार नागरिक, नैतिक मानव और आत्मिक साधक के रूप में भी गढ़ती थी।

तक्षशिला विश्वविद्यालय: स्थापना, संरचना और पाठ्यक्रम

तक्षशिला विश्वविद्यालय, प्राचीन भारत की विद्या-परंपरा का एक अत्यंत उज्ज्वल प्रतीक है। इसे विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय माना जाता है, जिसकी स्थापना का समय लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व बताया जाता है। तक्षशिला वर्तमान में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित है, और ऐतिहासिक रूप से यह गांधार जनपद का भाग था। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत और बौद्ध ग्रंथों में तक्षशिला का उल्लेख मिलता है। यह नगर न केवल शिक्षा का केंद्र था, बल्कि सांस्कृतिक, व्यापारिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण था।

तक्षशिला की स्थापना का श्रेय प्राचीन राजा उज्जयिनी के राजा जनक या गांधार के राजवंशों को दिया जाता है, लेकिन इसका प्रमुख विकास मौर्य काल में हुआ, जब यह बौद्ध शिक्षा का मुख्य केंद्र बना। महात्मा बुद्ध ने स्वयं भी यहाँ आगमन किया था और इसके पास अनेक स्तूप और विहार स्थापित किए गए थे। यह शहर उत्तरापथ मार्ग पर स्थित था, जिससे भारत के विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर मगध, कौशल, अवंती और पांड्य जैसे राज्यों से विद्यार्थी यहाँ आते थे।

संरचना और संचालन प्रणाली

तक्षशिला कोई एक भवन या केंद्रीय विश्वविद्यालय की तरह नहीं था, जैसा हम आज देखते हैं, बल्कि यह एक "शिक्षा नगरी" थी - जहाँ विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ शिक्षक अपने आश्रमों में विद्यार्थियों को शिक्षित करते थे। प्रत्येक शिक्षक का अपना गुरुकुल होता था, और विद्यार्थी अपनी रुचि और विषय के अनुसार उस आचार्य के पास जाकर अध्ययन करता था। यह व्यवस्था अत्यंत लचीली, स्वायत्त और योग्यता आधारित थी।

इस विश्वविद्यालय का कोई औपचारिक प्रवेश-परीक्षा या प्रमाणपत्र प्रणाली नहीं थी। छात्र की जिज्ञासा, शील और अध्ययन के प्रति समर्पण ही प्रमुख मापदंड थे। प्रत्येक आचार्य अपने अनुसार छात्र का चयन करता था और शिक्षा अवधि निश्चित नहीं होती थी - विद्यार्थी तब तक पढ़ता था जब तक वह स्वयं को विषय में निपुण न मान ले।

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

पाठ्यक्रम की विविधता

तक्षशिला में पढ़ाए जाने वाले विषयों की सूची अत्यंत विस्तृत और आधुनिक विश्वविद्यालयों से भी कहीं अधिक वैज्ञानिक और बहुविषयक थी। प्रमुख विषय निम्नलिखित थे:

1. **वेद और वेदांग** - वैदिक मंत्रों का उच्चारण, व्याकरण, छंद, निरुक्त, कल्प और ज्योतिष की शिक्षा दी जाती थी।
2. **धर्मशास्त्र और तर्कशास्त्र** - नैतिकता, दर्शन, न्याय और तर्क की विधियों पर विशेष बल था।
3. **आयुर्वेद और चिकित्सा शास्त्र** - तक्षशिला को विशेष रूप से चिकित्सा-विज्ञान के लिए जाना जाता है। प्रसिद्ध चिकित्सक **जीवक** ने यहीं शिक्षा प्राप्त की थी, जो बाद में मगध नरेश बिंबिसार के चिकित्सक बने।
4. **शस्त्रविद्या और राजनीति** - राजाओं और क्षत्रियों को राजनीति, कूटनीति, युद्धनीति, धनुर्विद्या और राजधर्म की शिक्षा दी जाती थी। **चाणक्य (कौटिल्य)** ने यहाँ शिक्षा प्राप्त की थी और बाद में चंद्रगुप्त मौर्य को प्रशिक्षित कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी।
5. **गणित और खगोलशास्त्र** - अंकगणित, रेखागणित, त्रिकोणमिति, ज्योतिष और ग्रह-नक्षत्रों की गति पर आधारित अध्ययन अत्यंत उन्नत था।
6. **व्याकरण और भाषा विज्ञान** - पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी व्याकरण का एक अद्वितीय उदाहरण है, जो तक्षशिला में ही रचा गया था।
7. **शिल्प, वास्तु और संगीत** - वास्तुकला, मूर्तिकला, नाट्य, वादन और गायन की शिक्षा दी जाती थी।

शिक्षण-पद्धति और अनुशासन

तक्षशिला की शिक्षा प्रणाली में श्रवण, मनन और निधिध्यासन को प्रमुख स्थान प्राप्त था। विद्यार्थी पहले शिक्षक से मौखिक शिक्षा प्राप्त करता था (श्रवण), फिर वह उस ज्ञान का चिंतन करता था (मनन), और अंततः उसे अपने जीवन में उतारता था (निधिध्यासन)। यह क्रम आत्मसात ज्ञान का मूल सूत्र था।

गुरु और शिष्य के बीच गहरा मानवीय और आत्मिक संबंध होता था। छात्र आश्रम में रहकर सेवा, अनुशासन, संयम और तप का पालन करता था। उन्हें सामाजिक जीवन, संस्कृति और व्यवहार में भी दक्ष बनाया जाता था। छात्र और शिक्षक दोनों ही अत्यंत तपस्वी जीवन जीते थे।

वैश्विक प्रभाव और महत्त्व

तक्षशिला का प्रभाव न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में, बल्कि मध्य एशिया, अफगानिस्तान, तिब्बत और चीन तक फैला हुआ था। यह शिक्षा का ऐसा केंद्र था, जहाँ से विद्वानों ने भारत के साथ-साथ पूरे विश्व में भारतीय ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की। बौद्ध भिक्षु, व्यापारी और राजनयिक यहाँ से शिक्षा लेकर विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में गए।

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

नालंदा विश्वविद्यालय: वैभव, आचार्य और शिक्षा प्रणाली

नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का सबसे सुव्यवस्थित और विस्तृत शिक्षा केंद्र था। इसकी स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम द्वारा की गई थी और यह 5वीं शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक सक्रिय रहा। नालंदा एक पूर्ण आवासीय विश्वविद्यालय था जहाँ 10,000 छात्र और लगभग 2,000 शिक्षक एक साथ निवास करते थे। इसका स्थापत्य, योजना, प्रशासनिक ढाँचा और पाठ्यक्रम सभी आधुनिक विश्वविद्यालयों की पूर्वज कल्पना के रूप में देखे जा सकते हैं।

प्रसिद्ध आचार्य जैसे नागार्जुन, आर्यदेव, धर्मपाल, शीलभद्र, बुद्धमित्र आदि यहाँ पढ़ाते थे। प्रवेश की प्रक्रिया कठोर थी और विद्यार्थी की तर्कशक्ति, स्मृति, अनुशासन और दर्शन संबंधी समझ का परीक्षण होता था। शिक्षा पूरी तरह निःशुल्क थी, जिसे राजा, व्यापारी वर्ग और जनता के दान से चलाया जाता था। शिक्षा के विषयों में बौद्ध दर्शन, योग, तंत्र, न्याय, मीमांसा, आयुर्वेद, खगोल, गणित, भाषाशास्त्र, कला और स्थापत्य प्रमुख थे।

बौद्ध शिक्षा परम्परा और विद्वत्जनों का योगदान

बौद्ध शिक्षा परंपरा ने भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक विस्तार दिया। विशेष रूप से महायान परंपरा में शैक्षिक संस्थानों को तीर्थ के रूप में देखा गया। तक्षशिला और नालंदा दोनों ही बौद्ध धर्म के महान केंद्र बने।

महायान बौद्ध धर्म के प्रमुख चिंतक नागार्जुन ने 'माध्यमिक दर्शन' का प्रतिपादन किया जो बाद में संपूर्ण एशिया में चर्चित हुआ। आचार्य धर्मपाल और शीलभद्र जैसे शिक्षकों ने बौद्ध धर्म की अनेक शाखाओं की व्याख्या की और शिक्षार्थियों को सम्यक ज्ञान प्रदान किया। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में वाद-विवाद, संवाद और निरंतर अध्ययन पर बल दिया जाता था। शिक्षकों की भूमिका केवल ज्ञाता की नहीं, अपितु मार्गदर्शक और साधक की थी। इस परंपरा ने संपूर्ण एशिया में शिक्षा का भारतीय स्वरूप स्थापित किया।

विदेशी विद्यार्थियों और यात्रियों के अनुभव

नालंदा और तक्षशिला की ख्याति इतनी अधिक थी कि चीन, तिब्बत, कोरिया, श्रीलंका, जापान जैसे देशों से छात्र यहाँ शिक्षा के लिए आते थे। विशेष रूप से चीनी यात्रियों ह्वेनसांग (Xuanzang) और इत्सिंग (Yijing) ने अपने यात्रा-विवरणों में इन संस्थानों की उच्च गुणवत्ता का उल्लेख किया है।

ह्वेनसांग ने नालंदा में कई वर्षों तक अध्ययन किया और शीलभद्र जैसे आचार्यों से शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने लिखा कि नालंदा में शिक्षा अत्यंत व्यवस्थित, गहन और तर्कशील थी। विद्यार्थियों का आचरण अनुशासित और साधक के समान था। प्रवेश कठिन परीक्षा के माध्यम से होता था। इत्सिंग ने उल्लेख किया कि यहाँ के शिक्षक-विद्यार्थी विचार विमर्श में संलग्न

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

रहते थे और व्याकरण, तर्कशास्त्र, औषधशास्त्र आदि पर खुले विमर्श होते थे।

शिक्षक-शिष्य संबंध

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार ही गुरु-शिष्य संबंध था। गुरु को 'आदर्श मानव' माना जाता था, जो केवल विषय विशेषज्ञ नहीं बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक और व्यवहारिक दृष्टि से भी श्रेष्ठ होता था। शिष्य गुरु की सेवा और सान्निध्य में रहकर ज्ञान प्राप्त करता था। यह संबंध विश्वास, श्रद्धा और समर्पण पर आधारित होता था।

नालंदा और तक्षशिला में यह संबंध अत्यंत जीवंत था। गुरु विद्यार्थी के चरित्र निर्माण में विशेष ध्यान देते थे। शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि एक उत्तरदायी, सुसंस्कृत और आत्मनिष्ठ नागरिक बनाना था। शिक्षा अनुशासन, अध्ययन, अभ्यास, आत्मचिंतन और जीवन निर्माण की प्रक्रिया थी।

पाठ्य-विषयों की विविधता (व्याकरण, दर्शन, गणित, आयुर्वेद आदि)

इन विश्वविद्यालयों की सबसे बड़ी विशेषता थी - विषयों की व्यापकता। शिक्षा का कोई एकरूप पाठ्यक्रम नहीं था, बल्कि विद्वानों की विशेषज्ञता और विद्यार्थी की रुचि के अनुसार विषय चुने जाते थे। व्याकरण में पाणिनि और पतंजलि की परंपरा पढ़ाई जाती थी, दर्शन में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और बौद्ध मतों की व्याख्या की जाती थी।

गणित में संख्या पद्धति, ज्यामिति, खगोलशास्त्र, रेखागणित आदि सिखाया जाता था। आयुर्वेद में शरीर रचना, निदान, चिकित्सा पद्धति और औषध शास्त्र को प्रमुखता दी जाती थी। साथ ही नीति शास्त्र, संगीत, चित्रकला, स्थापत्य और कृषि विज्ञान जैसे विषयों की भी शिक्षा दी जाती थी। यह बहुआयामी शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दक्ष बनाती थी।

शिक्षा की गिरावट के कारण

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के पतन के अनेक कारण थे। सबसे पहला और महत्वपूर्ण कारण था - विदेशी आक्रमण। 12वीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी के आक्रमण से नालंदा का संपूर्ण विनाश हुआ। पुस्तकालय जलाए गए, शिक्षक मारे गए और विद्यार्थी विस्थापित हो गए।

इसके अतिरिक्त शिक्षा का ब्राह्मणवादी संकीर्णता में सीमित हो जाना, राजा-महाराजाओं की उदासीनता, समाज की भौतिकता की ओर बढ़ती प्रवृत्ति, तथा नवस्थापित इस्लामिक शासन की वैचारिक भिन्नता ने शिक्षा की गति को धीमा कर दिया। बाद में अंग्रेजों ने मैकाले की शिक्षा नीति के माध्यम से भारतीय शिक्षा की आत्मा को ही बदल दिया। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्ति तक सीमित रह गया।

आधुनिक संदर्भ में प्राचीन शिक्षा की प्रासंगिकता

आज की शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, तकनीकी उन्नति और भूमंडलीकरण के युग में नई चुनौतियों से जूझ रही है। ऐसे समय में नालंदा और तक्षशिला की परंपरा हमारे

लिए आदर्श बन सकती है। उनकी शिक्षा प्रणाली में जो नैतिक मूल्य, बहुविषयक दृष्टि, संवाद पर आधारित शिक्षण और शोध की संस्कृति थी - वे आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

भारत सरकार द्वारा 2010 में नालंदा विश्वविद्यालय की पुनःस्थापना इसी प्रेरणा का परिणाम है। वर्तमान शिक्षा नीति (NEP 2020) भी शोध, नवाचार, नैतिक शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण और समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल देती है - जो प्राचीन शिक्षा प्रणाली की आत्मा रही है।

उपसंहार

नालंदा और तक्षशिला केवल शैक्षणिक संस्थान नहीं थे, वे भारतीय ज्ञान, संस्कृति और विवेकशीलता के प्रतीक थे। इन्होंने उस समय ऐसे नागरिक गढ़े जो न केवल विद्वान थे बल्कि नीति, विज्ञान, समाज, संस्कृति और प्रशासन में दक्ष थे।

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली ने यह सिद्ध कर दिया था कि जब शिक्षा का उद्देश्य जीवन की समग्रता हो, तब वह समाज और राष्ट्र को उन्नति की ओर अग्रसर करती है। आज यदि हम पुनः उसी मार्ग पर चलें, तो भारत को पुनः 'विश्वगुरु' बनने से कोई नहीं रोक सकता।

संदर्भ ग्रंथ:

1. राहुल सांकृत्यायन: ह्वेनसांग की यात्राएँ (राजकमल प्रकाशन)
2. UNESCO Report - Ancient Indian Knowledge Systems (2016)
3. शर्मा, बी.एन. - भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था
4. त्रिपाठी, रामशरण - नालंदा और तक्षशिला
5. नालंदा विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट (nalandauniv.edu.in)
6. सिंह, अर्चना - भारतीय शिक्षा की परंपरा